सब भेदों से परे – आदर्श का एक नमूना

ब्रह्माकुमार रामदास, गोरखपुर

शारीरिक बनावट, रंग-रूप व आहार के आधार पर यह सत्य है कि जानवरों की जातियाँ अनेक हैं पर मानव जाति एक है। बाघ, हाथी, भालू, कुत्ते और घोड़े में देखिये, कितनी भिन्नता है। इसी भिन्नता के कारण उनकी जातियाँ भी भिन्न-भिन्न हैं परंतु मानव के आकार, हाथ, पैर, मुँह, नाक और आँख में कितनी समानता है। सबकी एक-जैसी ही बनावट है। कुदरत ने उनके जिस्म के खून को भी एक-जैसा बनाया है। देखना, सुनना और बोलना भी एक जैसा ही होता है। फिर किस आधार पर यह कहा जाये कि मनुष्यों की जातियाँ अलग-अलग हैं?

एक शीशी में हिंदू का खून लिया जाये, दूसरी में किसी मुस्लिम का और दुनिया की किसी भी पैथोलोजी में जाँच के लिए भेजा जाये, क्या कोई बता पायेगा कि यह खून हिंदू का और वह मुस्लिम का है? यहाँ मेडिकल साइंस भी फेल है क्योंकि प्रकृति ने सभी इंसानों में एक जैसा ही खून बनाया है, तो भला जाति के आधार पर उस खून का बँटवारा कैसे हो सकता है?

ट्रेन दुर्घटना में हुई चार मौतें, स्टेशन के प्लेटफॉर्म पर एक साथ रखी गई चारों लाशें, क्या कोई निर्णय कर पायेगा कि कौन-सा किस जाति का शव है? हॉस्पिटल के एक लेबर रूम में चार महिलाओं ने अलग-अलग चार बच्चों को जन्म दिया। परिचारिका बच्चों को साफ-सुथरा करके उन महिलाओं के बेड पर ले जा रही थी। नवजात शिशु की प्रतीक्षा में खड़े एक सरदार जी ने परिचारिका से पूछा – मैडम, इनमें मेरा बच्चा कौन-सा है? परिचारिका झट बोली – आप अपना बच्चा खुद पहचानिये, यदि आप स्वयं, अपने बच्चे को नहीं पहचान पाते तो भला मैं कैसे पहचान सकती हूँ। हाँ, यदि तिलक लगाकर बच्चा जन्मा होता तो मैं समझ जाती कि यह हिंदू का बच्चा है। खतना कराकर आया होता तो मुसलमान का, क्रॉस पहने पैदा होता तो ईसाई का और पगड़ी बाँधे आता तो सरदार का बच्चा समझती लेकिन कोई बच्चा किसी धर्म या जाति का कोई निशान लेकर नहीं आता है। जिस कुल में वो पैदा होता है, उसी कुल का मान लिया जाता है।

किसी कुँवारी कन्या ने लोक-लाज के भय से अपने नवजात शिशु को सड़क के किनारे एक झाड़ी में फेंक दिया। सड़क से गुज़रते एक मौलवी की निगाह उस बच्चे पर पड़ी तो देखा, एक सर्प फन फैलाये बच्चे की रक्षा कर रहा है। मौलवी ने आश्चर्यवत् होकर कहा – 'हाय रे खुदा, तेरी कुदरत! बचाने वाला मार गया और मारने वाला बचा रहा है।' क्या आप बता सकेंगे कि वह बच्चा किस जाति का था? हाँ, इतना तो सभी कह देंगे कि इंसान की औलाद अर्थात् इंसान की जाति का ही है।

जाति का बंटवारा किसने किया, क्यों किया, कब किया, किस उद्देश्य से किया, इसका कुछ अता-पता नहीं है। हो सकता है, सामाजिक व्यवस्था को सुचारु रूप से चलाने हेतु उस समय की आवश्यक माँग रही हो पर आज के परिवेश में यह जाति-भेद एक खतरनाक और जानलेवा जहर साबित हुआ है जो संपूर्ण मानवता का गला घोंट रहा है। आज का मनुष्य, मानवता का मुखौटा लगाकर खूंखार दानव बन, घिनौने से घिनौने पाप कर्म कर रहा है।

आए दिन अखबारों में पढ़ने को मिलता है – एक 10 साल की अबोध बालिका के साथ बलात्कार कर, हत्या कर उसे नदी में फेंक दिया गया। स्कूली बच्चा उठा लिया गया, फिरौती का भुगतान न होने पर बच्चे को मार डाला गया। विवाहिता को जिंदा जला दिया गया। पिता ने पुत्री

के साथ मुँह काला किया। बेटे ने बाप को कुल्हाड़ी से काट डाला। पाँच बच्चों की माँ प्रेमी के साथ फरार हो गई। कब्र से नर-कंकाल निकाल विदेशों में भेजा गया। बहन ने प्रेम-प्रपंच में बाधक भाई की हत्या करा दी। मानव-मांस की तस्करी पकड़ी गई। ज़रा सोचिये, ये कर्म मानवीय मूल्यों से सुसज्जित मानव के हैं या मूल्यहीन खतरनाक दानव के? कहा गया है कि मानव विवेकशील प्राणी है। आज उसका विवेक कहाँ चला गया है? निठारी जैसा कांड क्या विवेकशील प्राणी का कार्य है? चलती ट्रेन में बम ब्लास्ट कर लाखों की जान लेना, धर्म-स्थान पर हंगामा कराकर हज़ारों को मौत के मुँह में झोंक देना, ट्रेन की बोगी पर पैट्रोल छिड़क कर सोये हुए यात्रियों को जिंदा जला देना, सांप्रदायिक दंगा कराकर सैकड़ों के खून से खिलवाड़ करना, क्या ये सब विवेकशील प्राणी के कर्म हैं? धिक्कार है मानव के ऐसे विवेक पर और लानत है ऐसी दानवता पर। आज मानव ने अपनी मानवता को सांप्रदायिकता की भयंकर आग में झोंक दिया है जिसमें पूरा विश्व जल रहा है। मानवता ने मूल जाति व धर्म को भूल, स्वयं को अनेक जातियों, उपजातियों, धर्मों व उपधर्मों में विभाजित कर, एक-दूसरे के प्रति नफरत एवं हैवानियत का बीज बो दिया है जिसके फलस्वरूप आज देश-विदेश एक-दूसरे के खून के प्यासे बन पड़े हैं। कहीं आतंकवाद तो कहीं उग्रवाद, कहीं माओवाद तो कहीं भाषावाद, कहीं धर्म के नाम पर धर्मयुद्ध ने तो कहीं जाति के नाम पर जातियुद्ध ने संपूर्ण विश्व में ज़हर भर दिया है। अनाचार, पापाचार, दुराचार, लूट-खसोट का चारों ओर साम्राज्य फैला हुआ है। विश्व की ऐसी ही दुर्दशा पर गीता के भगवान का यह वायदा – **'यदा-यदा हि धर्मस्य ..... सृजाम्याहम्' सत्य साबित होता है। भावार्थ है कि जब-जब धर्म की अति ग्लानि होती है, भगवान स्वयं अवतरित होते हैं।**

अब वही समय है जब भगवान भारत भूमि पर अवतरित होकर प्रत्येक दानव को मानव और पतित को पावन बना रहे हैं। बेहतर विश्व के लिये बेहतर ज्ञानपीठ यानी प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय, जो पूर्णत: मानव जाति एवं मानव धर्म पर आधारित है, के माध्यम से मूल्यनिष्ठ समाज की स्थापना का कार्य करा रहे हैं। ईश्वरीय ज्ञान एवं सहज राजयोग द्वारा विश्व परिवर्तन का कार्य तेज़ी से चल रहा है। इस ईश्वरीय ज्ञान का विस्तार विश्व के 133 देशों में है और उत्तरोत्तर बढ़ता ही जा रहा है क्योंकि परमात्मा का यह कार्य शतप्रतिशत सत्य है और इस सत्य को सभी स्वीकारते जा रहे हैं। निकट भविष्य में एक ऐसे युग का आना निश्चित है जहाँ लोग सुख-शांति, प्रेम-पवित्रता से सुसज्जित राज्य-भाग्य प्राप्त करेंगे। न होगा जाति-भेद, न होगा धर्म-भेद, एक राज्य, एक भाषा होगी। सभी लोग दैवी गुणों से परिपूर्ण, संपूर्ण निर्विकारी होंगे। कोई निर्धन, रोगी, दु:खी नहीं होगा। क्या आपने कभी सोचा है कि इस कलियुग के बाद एक ऐसा भी सत्य का युग आयेगा, जो सतयुग के नाम से जाना जायेगा? जिसके मॉडल के रूप में, राजस्थान में अरावली पर्वतमालाओं के बीच स्थित शांतिवन से लेकर ज्ञानसरोवर तक फैले ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय को देखा जा सकता है। यहाँ संस्कार परिवर्तन से संसार परिवर्तन का पाठ प्रतिदिन पढ़ाया जाता है। वहाँ जो भी गया उसी ने कहा –

नहीं कोई है वहाँ भेद-भाव
मात्र भाई-भाई का रिश्ता है,
धरती पर वह है एक ही स्थान
जहाँ दिखता हर कोई फरिश्ता है

वहाँ एक बार जाने से दिल इतना प्रसन्न हो जाता है कि बार-बार जाने को उत्साहित रहता है। विशेष जानकारी हेतु अपने स्थानीय सेवाकेंद्र से संपर्क कर सकते हैं। ❖

सत्यता और निर्भयता की शक्ति साथ हो तो सदा विजयी रहेंगे।